Teli Samaj

कैसे एक छोटी बच्ची की जिद ने भगवान को
अपना नियम बदलने पर मजबूर कर दिया?
भक्त शिरोमणि माता कर्मा
की अनकही गाथा
एक वृत्तचित्र प्रस्तुति

एक महायात्रा की झलकियाँ

संघर्ष और न्याय:

अत्याचारी राजा के खिलाफ विद्रोह और धर्मा तलेया का चमत्कार।

दिव्य महायात्रा:

झाँसी से लेकर राजिम होते हुए जगन्नाथ पुरी तक की 1000 किलोमीटर लंबी आध्यात्मिक यात्रा।

पुरी का चरमोत्कर्ष:

अहंकार का टूटना और भगवान का स्वयं आकर 'खिचड़ी' खाना।

अमर विरासत:

साहू समाज, आदिवासी परंपराओं और पुरी मंदिर में आज भी जीवित 1000 साल पुरानी विरासत।

केवल एक भक्त नहीं, एक युग प्रवर्तक

भक्ति

श्री कृष्ण की अनन्य भक्त, जिनकी निश्छल आस्था ने रूढ़िवादी कर्मकांडों को पीछे छोड़ दिया।

समाज सुधार

छुआछूत, ऊंच-नीच और सामाजिक रूढ़िवाद के खिलाफ मुखर आवाज़। महिलों के सशक्तिकरण का प्रतीक।

नेतृत्व

साहू (तेली) समाज का नेतृत्व करते हुए अत्याचारी शासकों के खिलाफ खड़ी हुई और समाज को नई दिशा दी।

माता कर्मा देवी (जीवनकाल: 1017 ई. - 1064 ई.) | जन्म: पाप मोचनी एकादशी संवत् 1073

TELISOCIETY.COM

आस्था के विविध रूप: दो धाराएँ, एक अगाध भक्ति

Teli Samaj

11वीं सदी का साहू वृत्तांत

- **स्थान:** झाँसी / नरवरगढ़ (उत्तर प्रदेश/मध्य प्रदेश)
- **जन्म:** 1017 ई., रामशाह (प्रसिद्ध तेल व्यापारी) के घर
- **समुदाय:** साहू (तेली) वैश्य समाज
- **विरासत:** सामाजिक विद्रोह और पुरी की महायात्रा।

अटूट सत्य

भगवान जगन्नाथ को अपने हाथों से खिचड़ी खिलाने वाली निश्छल भक्त।

17वीं सदी का जाट वृत्तांत

- **स्थान:** कालवा (नागौर, राजस्थान)
- **जन्म:** 1615 ई., जीवनराम डूडी के घर
- **समुदाय:** जाट समाज
- **विरासत:** मारवाड़ की मीरा, भक्तमाल में वर्णित बाल-सुलभ हठ।

Teli Samaj

बालपन के चमत्कार और करुणा

बचपन से ही कर्मा देवी का जीवन भगवान कृष्ण को समर्पित था, लेकिन उनकी भक्ति केवल पूजा तक सीमित नहीं थी—यह मानव सेवा में झलकती थी।

10 वर्ष की आयु

सहेली को जीवनदान:

जब उनकी सहेली डूबने के कारण अचेत हो गई, तो कर्मा ने उसे गोद में लेकर श्री कृष्ण का स्मरण किया, जिससे सहेली को चमत्कारिक रूप से होश आ गया।

दूध की मटकी का रहस्य

नंदिनी की सहायता:

दूध बेचने वाली अपनी सहेली नंदिनी की सहायता के लिए कर्मा ने नीम की टहनियों से एक गुड़ी (सहारा) बनाई। उस दिन नंदिनी को व्यापार में अप्रत्याशित लाभ हुआ।

कर्तव्य, संकट और धर्मा तलिया का चमत्कार

Teli Samaj

संकट:

नरवरगढ़ के राजा के हाथी को खुजली रोग हुआ। राजा का क्रूर आदेश: हाथी के स्नान के लिए पूरे मोतिया ताल को कड़वे तेल से भर दो, अन्यथा देश निकाला मिलेगा।

अस्तित्व पर खतरा:

7 दिन के भीतर इतना तेल देना साहू समाज के लिए आर्थिक बर्बादी और असंभव कार्य था।

ईश्वरीय हस्तक्षेप:

कर्मा ने समाज को ढांढस बंधाया। एक छोटे पात्र से तेल लेकर जैसे ही उन्होंने कुंड में डाला, श्री कृष्ण की कृपा से पूरा तालाब तेल से लबालब भर गया! (इसे आज धर्मा तलेया कहा जाता है)।

TELISOCIETY.COM

अन्याय के विरुद्ध विद्रोह और महाप्रस्थान

Teli Samaj

अन्याय का बहिष्कार:

चमत्कार के बावजूद, कर्मा ने स्पष्ट किया कि जो राजा प्रजा का शोषक हो, उसके राज्य में रहना उचित नहीं।

पलायन:

चतुर्भुज शाह (उनके पति) और कर्मा के नेतृत्व में पूरे तैलिक समाज ने नरवरगढ़ त्याग दिया और राजस्थान की ओर नई शुरुआत की।

व्यक्तिगत क्षति:

इसी बीच पति का आकस्मिक निधन। सती होने का विचार किया, पर ईश्वरीय आदेश से गर्भस्थ शिशु और समाज की रक्षा के लिए जीवन संघर्ष चुना।

TELISOCIETY.COM

Teli Samaj

महानदी से महासागर तक: दिव्य महायात्रा

झाँसी / नरवरगढ़

त्यागः
पारिवारिक और व्यापारिक जिम्मेदारियां अपने बड़े पुत्र को सौंपकर, मुट्ठी भर चावल और दाल लेकर आधी रात को प्रभु की खोज में निकल पड़ीं।

राजिम (छत्तीसगढ़)

महानदी तटः
सिहावा होते हुए राजिम पहुंचीं। यहाँ सारथी/सईस समुदाय ने उनका भव्य स्वागत किया। यहीं से एक नई लोक-परंपरा का जन्म हुआ।

जगन्नाथ पुरी (ओडिशा)

मंजिलः
वनों, नदियों और पहाड़ों को पार करते हुए, अंततः भगवान जगन्नाथ के समुद्र तट पर पहुँचीं।

TELISOCIETY.COM

राजिम का पड़ाव: करमा महोत्सव की उत्पत्ति

सारथी समाज का सत्कार:

राजिम में माता कर्मा के तपोबल को देखकर सारथी समाज ने उन्हें देवी रूप में पूजा और रात्रि जागरण कर सत्संग किया।

माता का आशीर्वाद:

विदाई के समय जब ग्रामीणों ने उन्हें रुकने की विनती की, तो माता ने कहा— मैं वापस नहीं आ सकूंगी, लेकिन भाद्रपद शुक्ल एकादशी के दिन करमसेनी वृक्ष की शाखा स्थापित कर पूजा करना, मेरा आशीर्वाद मिलेगा।

आज का प्रभाव:

आज भी राजिम और मध्य भारत के जनजातीय समुदायों में करमा पूजा और करमा नृत्य प्रकृति, श्रम और सामूहिकता के सबसे बड़े प्रतीक हैं।

Teli Samaj

TELISOCIETY.COM

पुरी में चरमोत्कर्ष: अहंकार बनाम निश्छल भक्ति

Teli Samaj

संस्थागत अहंकार

फटे-पुराने वस्त्रों में मंदिर की सीढ़ियां चढ़ती कर्मा को पुजारियों ने अपमानित कर धक्का दे दिया। पुजारियों के लिए भगवान केवल भव्य अनुष्ठानों में थे।

अनन्य समर्पण

अपमानित कर्मा ने समुद्र तट पर कुटिया बनाई। उसने अपने साथ लाए चावल-दाल की खिचड़ी पकाई और हठ कर बैठी कि जब तक प्रभु स्वयं आकर नहीं खाएंगे, वह अन्न ग्रहण नहीं करेगी।

TELISOCIETY.COM

माँ, मुझे भूख लगी है…"

"इतने अंधकार में भी उसे प्रभु की मोहनी सूरत के दर्शन हुए। जगन्नाथ प्रभु बाल रूप में आकर उनके हाथों से खिचड़ी खाते और उन्हें माँ कहकर पुकारते थे।"

यह अलौकिक दृश्य रोज़ का नियम बन गया। मंदिर में छप्पन भोग रखे रहते, लेकिन जगत के पालनहार समुद्र तट पर एक बूढ़ी माँ की खिचड़ी खाने रोज़ पहुँच जाते।

TELISOCIETY.COM

Teli Samaj

रहस्योद्घाटन: मंदिर में खिचड़ी के कण

- **पुजारियों का विस्मय:**
  एक सुबह जब पुजारियों ने मंदिर के पट खोले, तो देखा कि भगवान जगन्नाथ के मुख पर खिचड़ी लगी हुई है!
- **अहंकार का नाश:**
  पुजारियों को अपनी भूल का अहसास हुआ कि भगवान भव्यता के नहीं, भाव के भूखे हैं।
- **ईश्वरीय वरदान:**
  भगवान ने घोषणा की– मैं अब छप्पन प्रकार के भोग से पहले कर्मा की खिचड़ी का ही भोग ग्रहण करूंगा।

राजा ने ससम्मान माता कर्मा को राजभवन बुलाया, और पुजारियों ने क्षमा मांगी।

TELISOCIETY.COM

दिव्य महाप्रयाण (निर्वाण)

चैत्र शुक्ल पक्ष एकम्, संवत् 1121 (सन् 1064 ई.) को माता कर्मा ने अपना पांचभौतिक शरीर त्याग दिया और उनकी ज्योति स्वरूप आत्मा भगवान के हृदय में समाहित हो गई।

एक मार्मिक किंवदंती:

कहा जाता है कि माता के देहावसान के बाद, उनकी कुटिया के पास 6 महीने तक एक बालक को रो-रोकर माँ से खिचड़ी मांगते हुए देखा और सुना गया। स्वयं भगवान अपनी माँ को याद कर रहे थे।

Teli Samaj

TELISOCIETY.COM

Teli Samaj

एक अमर विरासत: 1000 वर्षों का प्रभाव

साहू/तेली समाज

सामाजिक एकता:
कर्मा जयंती पर आज भी विशाल आयोजन, सामूहिक विवाह और सामाजिक समरसता के कार्य। (विशेषकर छत्तीसगढ़ और मध्य प्रदेश में सार्वजनिक अवकाश)।

जगन्नाथ मंदिर, पुरी

दैनिक परंपरा:
आज 1000 साल बाद भी, भगवान जगन्नाथ को सबसे पहले 'कर्मा बाई की खिचड़ी' का ही बालभोग लगाया जाता है।

आदिवासी और लोक संस्कृति

प्रकृति पूजा:
करमा पर्व, करमा नृत्य और 'जावा' की परंपरा के रूप में मध्य और पूर्वी भारत की जनजातियों में करमसेनी देवी के रूप में पूजनीय।

Teli Samaj

जगन्नाथ का भात, जगत पसारे हाथ

माता कर्मा का जीवन केवल एक धार्मिक कथा नहीं है। यह इस बात का प्रमाण है कि:

- कर्म और धर्म एक हैं: उन्होंने व्यवसाय, परिवार और समाज की जिम्मेदारी निभाते हुए मोक्ष पाया।
- भक्ति में समानता है: उनके लिए भगवान किसी मंदिर के बंद दरवाजों के मोहताज नहीं थे।
- सच्चा हठ: अन्याय के खिलाफ उनका हठ समाज को बचाता है, और भगवान के लिए उनका हठ ईश्वर को धरती पर ले आता है।

TELISOCIETY.COM

नियम दुनिया बनाती है, पर प्रेम भगवान को नियम बदलने पर विवश कर देता है।